

कमजोर मानसून ने खाद्य सुरक्षा के सामने कई चुनौतियां खड़ी कीं। स्थिति के जवाब में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा.कृ.अनु.प.) ने प्रौद्योगिकी आधारित फसल योजना तैयार की ताकि सूखे से प्रभावित खरीफ में सुधार हो, साथ ही खरीफ में हुए नुकसान की भरपाई रबी मौसम से हो सके। इसके लिए देश भर में फैले परिषद के 97 संस्थानों, 44 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और 569 कृषि विज्ञान केंद्रों के तंत्र को मुस्तैद कर खेतों तक उपयुक्त तकनीकें पहुंचायी गईं साथ ही मीडिया द्वारा सिद्ध उत्पादन और सुरक्षा प्रौद्योगिकियों को पहुंचाया गया।

अनुसंधान मोर्चे पर राष्ट्रीय हर्बेरियम पौधों में 294 नए नमूने जोड़े गए, जबकि राष्ट्रीय रेपोजेटरी में 109 लाल प्याज, 57 सफेद प्याज और 46 लहसुन संचयन का समावेश हुआ। मेगालास नाम से एक नई - माईट और अनामित प्रजाति खोजी गई। यह 200 माइक्रोन का सूक्ष्मतम आर्थोपोड है। सूडोमोनास का प्रभेद प्यूटिडा 'जीएपी-पी 45' द्वारा सूखा रोधी पौधों में आदर्श प्रोटीन संश्लेषण के लिए उपयोगी पाया गया। परिषद द्वारा देश के विभिन्न कृषि जलवायुवीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त फसल तथा बागवानी फसलों की 130 किस्में/संकर विमोचित/पहचाने गए। खाद्यान्न फसलों के कुल 7,340 टन प्रजनन बीज और 63,415 टन गुणवत्ता बीज का उत्पादन लिया गया। किसान के खेत पर भागीदारी बीज उत्पादन कार्यक्रम के तहत 31,900 टन गुणवत्ता बीज का उत्पादन किया गया।

विश्व में पहली बार भैंस में हैंड गाइडेड क्लोनिंग तकनीक का मूल्यांकन किया गया। इस तकनीक का प्रयोग कर 'गरिमा' नामक कटिया जन्मी जो पूर्ण स्वस्थ है। दक्षिण एशिया में खुरपका - मुंहपका रोग में नियंत्रण प्रयास हेतु भुवनेश्वर में एक अंतर्राष्ट्रीय खुरपका और मुंहपका रोग रिक्रेंस प्रयोगशाला स्थापित की गई।

श्रिंप जल कृषि में अमोनिया और नाइट्रेट विलगन हेतु खोई एक सफल बायो-स्ट्रूमिलेटर साबित हुई। जैविक घटकों के प्रयोग से प्राप्त श्रिंप उत्पादन में बेहतर खाद्य कन्टसेल अनुपात के साथ आसार में सुधार पाया गया। खेतों पर प्रदर्शन के लिए बायो सिक्वोर्ड जीरो वाटर एक्सचेंज पद्धति तैयार है। इसी प्रकार नर्सरी प्रौद्योगिकी के लिए माइक्रोफीड का व्यावसायिक स्तर का उत्पादन तैयार है। लुप्त होती श्रिंप प्रजाति पुंटियस पलचैल्लास का पहली बार प्रजनन किया गया।

देश भर में 26,028 ट्राइल्स कर कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा सुधरी और उपयुक्त तकनीक प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन किया गया। ग्रामीण महिलाओं में केंद्रों के द्वारा सशक्तिकरण के लिए कम मेहनत, बेहतर स्वास्थ्य और पोषण की पुष्टि से उपयुक्त 105 तकनीकों का मूल्यांकन किया गया। 51,101 हैक्टर क्षेत्र में 86,285 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन किए गए। कुल 56,819 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें ग्रामीण युवाओं और कार्यरत प्रसार कार्यकर्ताओं सहित 15.40 लाख किसानों ने भाग लिया। इसी श्रृंखला में 3.10 लाख ग्रामीण युवाओं के लिए 12,978 स्किल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम किए गए। वहीं 30,330 गांवों के 1.40 लाख किसानों के मिट्टी, पानी और पादप सामग्री से संबंधित कुल 1.58 लाख नमूनों का विश्लेषण किया गया।


देश में उच्च कृषि शिक्षा के मापदंडों और गुणवत्ता को समृद्ध करने और बनाए रखने के लिए कृषि प्रबंधन पर दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम प्रारंभ किया गया और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को प्रेरित किया गया। उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के लिए परिषद की राष्ट्रीय प्रोफेसर योजना के तहत 'नोरमेन बोर्लॉग चेरर इन एग्रीकल्चरल बायोटेक्नालॉजी फॉर क्रॉप इंप्रूवमेंट' की स्थापना की गई। राष्ट्रीय कृषि नवोन्वेषी परियोजना (एनएआईपी) द्वारा चुनौतीपूर्ण कृषि और संबंधित प्रौद्योगिकियों पर 75 उप-परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की और उनकी शुरुआत कराई। परिषद द्वारा विकसित सूचना प्रौद्योगिकी आधारित सूचना



---

एवं संचार विशेषज्ञ प्रणालियां और डाटाबेस प्रबंधन को क्रियान्वित किया गया। कृषि वृद्धि और विकास को त्वरित करने की दिशा में किसानों और पत्रकारों सहित 55 व्यक्तियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए उपयुक्त रणनीतियों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किए जा रहे प्रतिबद्ध प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डेअर/भा.कृ.अनु.प. वार्षिक रिपोर्ट 2009-2010 भारतीय कृषि से जुड़े विभिन्न स्टेकहोल्डरों के लिए ज्ञान स्रोत साबित होगी।



शरद पवार  
अध्यक्ष  
भाकृअनुप सोसाइटी

